यात्रा अमरनाथ की..

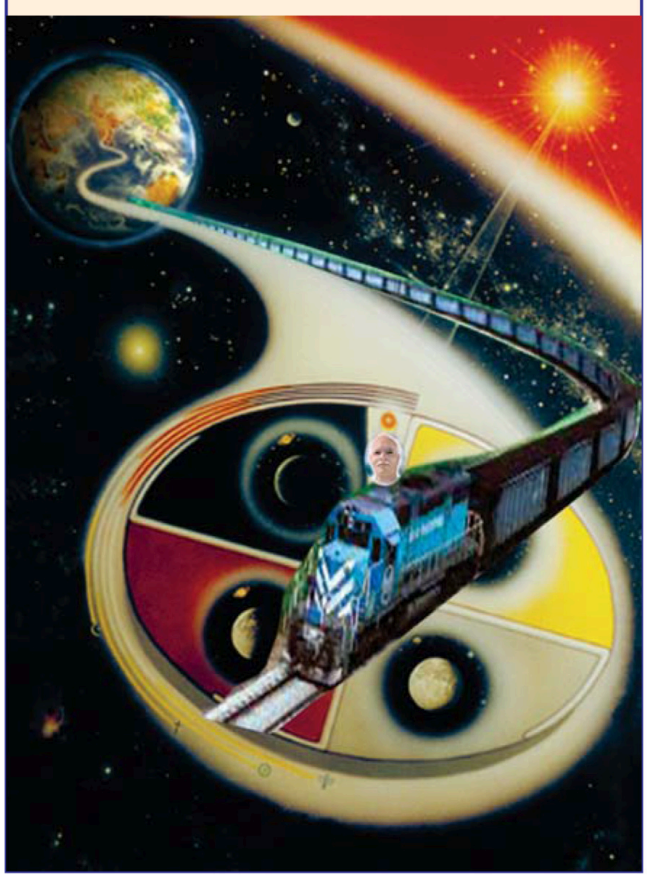

सतयुग व त्रेतायुग स्टेशन तक तो सभी यात्री दिव्य गुणों के आभूषणों से सजे-धजे थे, सभी खुश थे। आराम से यात्रा कर रहे थे। आगे जब द्वापर युग का स्टेशन आया वहां से पाँच लुटेरे काम, क्रोध , लोभ,मोह और अहंकार चने बेंचने के बहाने ट्रेन में चढ़ गये। उन पाँचों ने चढ़ते ही अपना धंधा शुरू कर दिया।

संसार में अनेक यात्राएँ होती है जैसे विदेश यात्रा, हज यात्रा, वैष्णों देवी यात्रा, अमरनाथ की यात्रा आदि आदि। आज आपको ऐसी यात्रा के बारे में बताने जा रहे हैं जो अपने आप में अनोखी है। इस यात्रा द्वारा ही सच्चे अमरनाथ परमात्मा शिव से सच्चा मिलन हो सकता है। इस यात्रा के लिए ट्रेन **सतयुग** से चलती है। यह ट्रेन **पाँच** प्लेटफार्मों से गुजरती हुई जाती है। 1. सतयुग 2. त्रेतायुग 3. द्वापरयुग 4. कलियुग. 5. संगमयुग।

इसका आखरी पड़ाव **संगमयुग** प्लेटफार्म है। जहाँ से संगम एयरपोर्ट से प्लेन द्वारा अमरनाथ जा सकते है क्योंकि दूरी बहुत थी तीन लोक से पार जाने की यात्रा थी। ट्रेन सतयुग पर खड़ी थी। एक बार यह यात्रा कर ली मानो उनकी जन्म-जन्मान्तर की भगवान को पाने की जो प्यास है वह बुझ जायेगी। अमरनाथ सदाकाल के लिए अमर बना देंगे। तो आइए यह अनोखी यात्रा कब शुरू हुई और कब समाप्त होगी यह जान लें ....।

भगवान ने संसार में हमें जब भेजा तब **सुख-शान्ति** से भरपूर करके भेजा था। उन्होंने संसार रूपी शताब्दी एक्सप्रेस ट्रेन चलाई। जिसका निर्माण पृथ्वी, अग्नि, जल, आकाश एवं वायु के मैटेरियल से करवाया। रेलगाड़ी का सफर पाँच हजार कि.मी. जिसमें सभी डिब्बे एयर कंडीशन के होने के कारण यात्री भी **वी.आई.पी. देवता श्रेणी** के 9 लाख यात्री टिकट कटा कर ट्रेन में बैठे हुए थे। सतयुग रेलवे स्टेशन से गाड़ी छूटी। गाड़ी आगे बढ़ी 1250 कि.मी. चलने के पश्चात दूसरा रेलवे स्टेशन त्रेतायुग आया जहाँ से 33 करोड़ यात्री बैठे, ट्रेन चलती रही आगे बढ़ती रही। यात्री दिव्य गुणों के आभूषणों से सजे-धजे थे, सभी खुश थे। आराम से यात्रा कर रहे थे। आगे द्वापर युग का स्टेशन आया वहां से **पाँच लुटेरे काम, क्रोध ,लोभ,मोह और अहंकार** चने बेंचने के बहाने ट्रेन में चढ़ गये। उन पाँचों ने चढ़ते ही अपना धंधा शुरू कर दिया। कोई ठगी की चाय, कोई चोरी की कचौड़ी तथा ईर्ष्या की आइस्क्रीम बेच रहा था। कोई अपवित्रता के बिस्कुट बेच रहा था। कोई झूठ के समोसे जिसमें देहभान की नशीली दवा भरी थी। यात्रियों ने यह चीजें जीवन में पहली बार देखी, इसलिए उनको लेने की उत्सुकता हुई। उन्होंने जैसे ही लेकर खाना शुरू किया तो यात्री एक-एक करके अज्ञान निन्द्रा में सोते गए। लुटेरों ने मौका पाकर दिव्य गुणों के जेवर लूट लिए। जब तक उनकी नींद खुली तब तक सबकुछ छिन चुका था। कलियुग के स्टेशन पर आने के पश्चात वहां पर यात्रा के लिए भारी भीड़ उमड़ पड़ी। लगभग 600 करोड़ यात्री चढ़ गए। गाड़ी में जगह का अभाव होने के कारण यात्री ट्रेन के उपर चढ़ गये। अन्तिम स्टेशन आने के थोड़ा पहले ही अंधविश्वास व गुटके के नक्सलवादियों ने सत्यता की पटरी को सम्प्रदायिकता की बारूदी सुरंग बिछाकर उड़ा दिया। परिणाम स्वरूप ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो गई, जिसमें अनेक यात्री घायल हो गये तथा कुछ गम्भीर रूप से घायल हो गये और अमरनाथ यात्रा खटाई पड़ गई चारों तरफ डर, भय तथा घबराहट का माहौल था। सभी दु:खी अशांत होकर अपने सच्चे अमरनाथ परमात्मा को पुकारने लगे। भगवान से देखा नही गया वह तुरन्त अपने निजी वाहन **ब्रह्मा** के तन में प्रवेश करके अपने वत्सों से मिलने आ गये। उनके आते ही लुटेरे काम, क्रोध, लोभ,मोह और अहंकार भाग गये। ईश्वर ने तुरन्त एरोप्लेन और रॉकेट मंगाया और सभी बच्चों को वापस अपने घर परमधाम में लाने की तैयारी में लग गये। जब बच्चों ने भगवान से पूछा कि आपने प्लेन तथा रॉकेट क्यों मँगाया तो उन्होंने कहा कि जैसे मेरा नाम ही है शिव भोला भाला, मैं ब्रह्माण्ड को छोड़ आपकी पुकार सुन दौड़ा चला आया। लेकिन यहाँ आने पर देखा कि जिन्होंने मुझे पहचाना वह देखते ही मुझसे चिपक गए लेकिन कई बच्चों की याददाश्त चले जाने के कारण संशय में है कि ये ही हमारे असली पिता है या नहीं। इसलिए मैंने सोचा कि जो मुझे जानेंगे एवं मेरा कहना मानेंगे वह ही मेरी बाँहों के रॉकेट में जायेंगे और उन्हें सतयुग,त्रेतायुग में आने के लिए विश्व की बादशाही का विशेष पैराशूट मिलेगा लेकिन जो मुझे जानेंगे नहीं, मेरी मानेंगे नहीं उन्हें रिमाण्ड पर लेकर के दु:ख के एरोप्लेन में जायेंगे। उन्हें हमारे दूत दो युगों तक नीचे नहीं उतरने देंगे। उन्हें द्वापर युग से बिना सूट-बूट के नीचे भेज देंगे। यह कोई कल्पना नहीं बल्कि सच्चाई है जिसका परमात्मा ने इस धरा पर आकर रहस्य खोला है कि जीवन एक यात्रा है जिसमें शरीर एक ट्रेन की तरह है और आत्मा उसका ड्राईवर है। आज चारो तरफ दु:ख अशान्ति बढ़ती जा रही है कारण किसी को भी ईश्वरीय याद का सिग्नल नहीं मिल रहा है। जिस कारण धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, भाषा के नाम पर एक्सीडेंट बढ़ते जा रहे है। परिणाम स्वरूप पापाचार अत्याचार बढ़ गया है। अब परमात्मा कहते है पापों को मिटाने के लिए सच्चे अमरनाथ परमात्मा की यात्रा की आवश्यकता है जिसे रूहानी यात्रा कहते है। तो आइये **प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय** के एयरपोर्ट पर जहां यात्रा के लिए पहला जत्था रवाना होने जा रहा है। आप एयरपोर्ट के लिए स्थानीय ऑफिस से अमरनाथ जाने के लिए रिजर्वेशन करा सकते है। खुद निर्णय लीजिये आपको प्लेन में जाना है या रॉकेट में ? टिकट लेने का आखरी समय कुछ वर्ष और फिर सीटें फुल का बोर्ड लग जायेगा।

त्रिवेन्द्रम। प्रसिद्ध निर्देशक व कवि कवालम नारायण पनिकेर, प्रसिद्ध लेखक नीला पद्मनाभम्, कानायी कुंजीरामन्, इसरो के साइंटिस्ट वी.कृष्णनन्, कृषि वैज्ञानिक गोपीमणि जी, निर्देशक सूर्य कृष्णमूर्ति, प्रसिद्ध गीतकार एजाचेरी रामचन्द्रन तथा अन्य।

.रानियां। आध्यात्मिक सेमीनार में प्रमुख समाज सेवक सुभाष गोयल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.डॉ.सीमा तथा ब्र.कु.कमलेश।

रीवा। ग्रामीण सेवा योजना में युवाओं की साइकिल यात्रा एवं व्यसन मुक्ति अभियान में मंचासीन जिला कलेक्टर एस.एन.रुपला, डॉ.ए.के.मिश्रा, ब्र.कु.निर्मला, प्रतिभागी तथा अन्य।

सरमाण - वडोदरा। स्नेह सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए योगाचार्य हरीश वैद्य, ब्र.कु.डॉ.निरंजना, ब्र.कु.दीपिका, ब्र.कु.नरेन्द्र, रीया बहन तथा ब्र.कु.प्रीति।

सिकन्दरामऊ। मातेश्वरी जी के स्मृति दिवस पर इंसपेक्टर अजीत सिंह, डॉ.दया शंकर तथा ब्र.कु.विनीता।

सुजानपुर-टोहरा। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह तथा विधायक राजेन्द्र राजा को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.प्रेम तथा ब्र.कु.सन्तोष।

वाधलधरा-वलसाड। कॉलेज के युवाओं को राजयोग मेडिटेशन के महत्व पर समझाते हुए ब्र.कु.रोहित।